शाला सिद्धि – हमारी शाला ऐसी हो

"जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं"

(A Case Study of My School)

शासकीय प्राथमिक शाला बोधवाडा

28 फरवरी 2017

अनुक्रमणिका

परिचय एवं भूमिका 2

पृष्ठभूमि 3

शाला में शाला सिद्धि कार्यक्रम का आयोजन 3

प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण –..... 4

मेरी शाला का स्वआकलन –..... 5

मेरी शाला का बाह्यमूल्यांकन – 7

शाला उन्नयन कार्ययोजना का निर्माण –..... 8

कार्ययोजना का क्रियान्वयन..... 9

उपलब्धियां..... 11

चुनौतियाँ..... 12

आगामी लक्ष्य 13

परिचय एवं भूमिका

धार जिले के तिरला विकासखंड का ग्राम बोधवाड़ा इंदौर अहमदाबाद मार्ग पर स्थित है। यह अपने विकासखंड मुख्यालय से 6 किमी की दूरी पर स्थित है। ग्राम बोधवाड़ा में सामान्य (राजपूत, पाटीदार), अजा एवं अजजा जाति के लोग मिश्रित स्वरूप में निवास करते हैं। अप्रेल 2016 की स्थिति में ग्राम की जनसंख्या 980 है जिसमें 493 पुरूष एवं 487 महिलाएं हैं। 6 से 14 वर्ष के बच्चों की संख्या 222 है इनमें 106 बालक तथा 116 बालिकाएं हैं। ग्रामीण अर्थव्यस्था मुख्य रूप से खेती और मजदूरी पर निर्भर है। ग्राम बोधवाड़ा में हाईस्कूल तक अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। ग्राम के शासकीय हाईस्कूल केंपस में ही शासकीय माध्यमिक एवं प्राथमिक शालाएं भी स्थित है। श्रीमति तिलोत्तमा शिंदे जनशिक्षा केंद्र प्रभारी एवं प्राचार्य हाईस्कूल बोधवाड़ा के रूप में कार्यरत हैं।

शासकीय प्राथमिक शाला बोधवाड़ा (23251205001) में 2 शिक्षिकाएं कार्यरत हैं तथा शाला में कुल दर्ज बच्चों की संख्या 48 है।

शाला में पदस्थापना

 श्रीमति कविता मित्तल (प्रधानपाठिका)	 श्रीमति प्रज्ञा वैष्णव
सहायक अध्यापक	सहायक अध्यापक
शाला में पदस्थापना दिनांक - 22 दिसंबर 2009	शाला में पदस्थापना दिनांक - 08 जुलाई 2013

शाला में दर्ज छात्र संख्या

कक्षा	बालक	बालिका	योग
1	8	6	14
2	5	5	10
3	6	4	10
4	2	3	05
5	4	5	09
योग	**25**	**23**	**48**

उपरोक्त छात्र संख्या में अनुसूचित जाति के 9, अनुसूचित जनजाति के 33 तथा सामान्य एवं पिछडा वर्ग के 6 बच्चे शामिल हैं।

पृष्ठभूमि

हमारी शाला में बच्चों कि शिक्षा कि गुणवत्ता के सुधार हेतु पूर्व से ही अपनी क्षमातानुरूप प्रयास किये जा रहे थे, परन्तु हमें शाला के सर्वांगीण विकास के सभी क्षेत्रों की ना तो जानकारी थी और ना ही हम उसके अनुसार अपनी वस्तुस्थिति, प्राथमिकताओं व आवश्यकताओं को समझ पाते थे। जब हमारी शाला का चयन भी "हमारी शाला ऐसी हो" कार्यक्रम हेतु किया गया और इस कार्यक्रम पर जब शाला में साथियों से चर्चा होती थी तब हमें भय था कि पता नहीं अब क्या नया कार्य करना होगा। जब कार्यक्रम के अंतर्गत मैंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्र, धार में प्राप्त किया तब मुझे ज्ञात हुआ कि यह कोई नया कार्य तो नहीं है अपितु इसकी सहायता से अपनी शाला की प्राथमिकताओं व आवश्यकताओं को व्यवस्थित रूप से चिन्हित कर एवं एक योजना तैयार कर अपनी शाला के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सकता हैं।

"हमारी शाला एसी हो" पुस्तिका के शुरूआती पृष्ठों पर दी गई जानकारियों को पढने पर मैंने यह जाना कि यह कोई नया कार्यक्रम नहीं है बल्कि शाला में होने वाले दैनिक क्रियाकलापों को समग्र रूप से मापने का एक प्रयास है। शाला की वर्तमान स्थिति को जानना एवं यथाशक्ति उन्नयन की योजना बनाना इस कार्यक्रम का विशेषता है। शाला की दैनिक गतिविधियों तथा शाला से संबंधित सभी पक्षों को मापने का साधन इसके पहले हमारे पास नहीं था। साथ ही उपरोक्त पक्षो के उन्नयन हेतु जो प्रयास शाला द्वारा किए जाने हैं उनके लिए कोई मार्गदर्शिका शालाओं के पास उपलब्ध नहीं होती थी। इस कार्यक्रम की हेंडबुक से जानने को मिला कि इस कार्यक्रम का लक्ष्य शाला में भयमुक्त आनंददायी वातावरण का निर्माण करना है जहां बच्चे अपनी आयु अनुरूप दक्षताओं को प्राप्त कर सकें। शाला से संबंधित विभिन्न पक्षों को विशिष्ट मानकों के आधार पर देखते हुए शाला विकास की योजना बनाना इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

शाला में शाला सिद्धि कार्यक्रम का आयोजन

शाला सिद्धि कार्यक्रम अंतर्गत मेरी शाला में कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों का आयोजन पूर्वनिर्धारित प्रक्रिया के आधार पर निम्नानुसार किया गया है एवं किया जा रहा है –

1- स्व-मूल्यांकन
2- बाह्य मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन निर्माण
3- शाला द्वारा कार्ययोजना निर्माण
4- कार्ययोजना का क्रियान्वयन

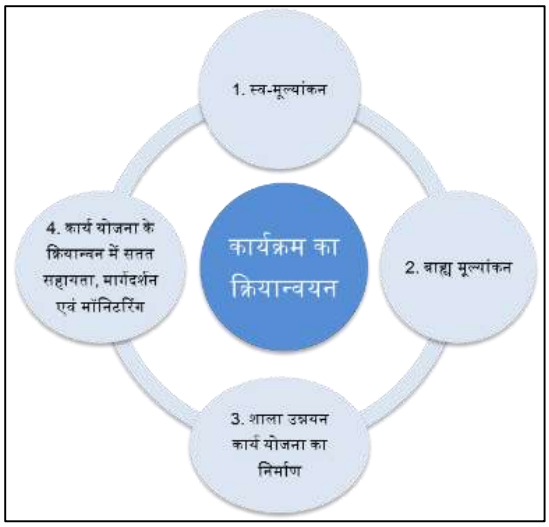

शासकीय प्राथमिक शाला बोधवाड़ा में शाला सिद्धि कार्यक्रम के क्रियान्वयन की महत्वपूर्ण तिथियां –

गतिविधि	दिनांक / अवधि
प्रशिक्षण	11 से 13 जून 2016
शाला स्टाफ का उन्मुखीकरण	14 जून 2016 से प्रारंभ
शाला का स्वआकलन	जुलाई 2016 से प्रारंभ
शाला का बाह्यमूल्यांकन	03 अगस्त 2016
शाला स्तर पर कार्ययोजना निर्माण (आयाम 2,3,7 पर)	सितंबर एवं अक्टूबर 2016
बाह्यमूल्यांकन टूल की पोर्टल एंट्री एवं प्रतिवेदन निर्माण	16 नवंबर 2016
शाला द्वारा कार्ययोजना पर कार्य आरंभ	माह अक्टूबर 2016 से
शाला द्वारा कार्ययोजना की पोर्टल एंट्री	11 फरवरी 2017

प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण –

शाला के चयन उपरांत कार्यक्रम के संचालन हेतु मुझे 3 दिवसीय प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्र, धार में प्राप्त करना था। शासकीय शालाओं में गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु शासन विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन करता है। डाईट धार में प्रशिक्षण के प्रथम दिवस मैं और मेरे साथी प्रशिक्षणार्थी इस कार्यक्रम को भी अन्य कार्यक्रमों की ही तरह देख रहे थे।

दिनांक 11 जून से 13 जून 2016 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्र, धार पर कार्यक्रम के संबंध में प्रशिक्षण प्राप्त किया। जनशिक्षाकेन्द्र प्रभारी प्राचार्या श्रीमति तिलोत्तमा शिंदे को भी इन्हीं तिथियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही शाला के बाह्य मूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल एवं जनशिक्षक श्री जगदीश चौहान को प्राथमिक शाला बोधवाड़ा का बाह्यमूल्यांकनकर्ता नियुक्त करते हुए 11 जून से 14 जून 2016 में ही प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जनशिक्षक श्री जगदीश चौहान द्वारा उक्त अवधि में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया जा सका था। उन्हें आगामी बैच में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण में दिए गए निर्देशों के अनुसार प्रशिक्षण के ठीक पश्चात मुझे शाला के शिक्षकों का शाला सिद्धि कार्यक्रम हेतु उन्मुखीकरण करना था। इसके पश्चात बाह्यमूल्यांकनकर्ताओं द्वारा बाह्यमूल्यांकन का कार्य किया जाना निर्धारित था। तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण के अगले 7 दिवसों में शाला प्रमुख द्वारा शाला के अन्य सदस्यों को कार्यक्रम के बारे में समझाना तथा उसके बाद अगले 7 दिवसों में शाला का स्वआकलन किया जाना नियत किया गया।

प्रशिक्षण में कार्यक्रम के स्वरूप को प्रारंभिक रूप से समझने पर मैंने पाया कि अभी इस कार्यक्रम पर मुझे और समझ विकसति करनी होगी। मैंने यह भी जाना कि इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन केवल प्रधान पाठक अकेले अपने स्तर से नहीं कर सकता है इसलिए मैंने समयानुसार मेरी साथी शिक्षिका श्रीमति प्रज्ञा वैष्णव, बाह्य मूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल एवं प्राचार्या श्रीमति तिलोत्तमा शिंदे के साथ चर्चा करना एवं उनकी मदद लेना प्रारंभ किया। मैं और मेरी साथी शिक्षिका शाला समय के बाद भी आयामों एवं मानकों पर चर्चा करते थे

तथा शाला सिद्धि हेंडबुक को स्वअध्ययन हेतु घर भी ले जाते थे।

इस दौरान अतिरिक्त समय की व्यवस्था करना दौनों के समक्ष बड़ी चुनौती रही। कई बार की चर्चाओं एवं शाला सिद्धि हेंडबुक के स्वअध्ययन की सहायता से उन्मुखीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

मेरी शाला का स्वआकलन –

साथी शिक्षिका के उन्मुखीकरण एवं स्वअध्ययन के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि इस कार्यक्रम का स्वरूप बहुत वृहद है। इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन केवल प्रपत्रों के आधार पर नहीं किया जा सकेगा। यह अनुभव प्रशिक्षण के दौरान नहीं हो पाया था।

कार्यक्रम के अगले हिस्से के रूप में शाला का स्वआकलन किया जाना था। प्रत्येक आयाम हेतु दिए गए विचारणीय प्रश्नों पर चर्चा के दौरान तथा मानक एवं स्तर को समझ कर स्तर निर्धारण करने में कई बार कुछ आयामों में पूरा दिन समाप्त हो जाता था। शुरूआत में तथ्यात्मक जानकारी एवं साक्ष्यों के स्रोत एक समान लगते थे किंतु धीरे धीरे दोनों की उपयोगिता एवं अंतर समझ आने लगा। स्वआकलन की पूरी प्रक्रिया अनुसार सभी 46 मानकों पर शाला द्वारा अपना स्तर तय प्रक्रिया अनुसार निर्धारित किया गया। स्वआकलन में शाला स्टाफ, संकुल प्राचार्या तथा बाह्यमूल्यांकनकर्ता से भी सहयोग प्राप्त किया गया। स्वआकलन के दौरान जिला एवं राज्य स्तर के विभिन्न दलों द्वारा भी शाला का भ्रमण किया गया।

स्वआकलन के संबंध में अब मेरी साथी श्रीमति प्रज्ञा वैष्णव का कथन –

> *"शाला में अपने नियुक्ति दिनांक से ही मैं यह जानने की इच्छुक थी कि किस प्रकार से मैं अपनी क्षमताओं का विकास कर सकती हूं, स्वआकलन के दौरान वे सभी बिंदू सूचीबद्ध होते गए जिन्हें में पिछले समय से खोज रही थी। स्वआकलन से मुझे स्वयं के और शाला के वर्तमान स्तर को जानने में न केवल मदद मिली बल्कि मैं यह भी जान पायी कि मुझे व मेरी शाला को अभी और कितना आगे जाना है।"*

शाला द्वारा स्वआकलन पूर्ण कर लेने पर बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल एवं आर्क से श्री देवेन्द्र शर्मा द्वारा बताया गया कि स्वआकलन की जांच सूची में राज्य स्तर से कुछ परिवर्तन किए गए हैं। तत्पश्चात हमारे द्वारा नए प्रपत्र पर स्वआकलन की जांच सूची तैयार की गयी। इसमें शेष रही अपेक्षाओं एवं उनके अनुसार सुधार के क्षेत्रों को भी सूचीबद्ध किया गया।

नवीन निर्देशों एवं प्रपत्रों के अनुसार पुन: स्वआकलन प्रक्रिया पूर्ण की गयी। उन्मुखीकरण से लेकर स्वआकलन की प्रक्रिया पूर्ण होने में लगभग दो माह का समय लगा। यह कार्य शाला से संबंधित सभी पक्षों की उपस्थिति में किया गया तथापि समुदाय एवं पालकों की भागीदारी बहुत अधिक नहीं हो सकी।

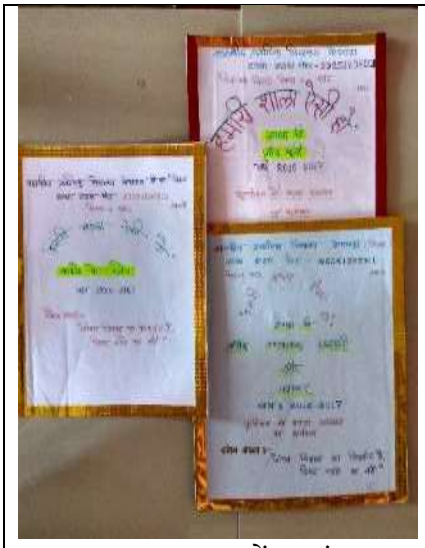

शाला द्वारा किए गए स्वआकलन की झलक –

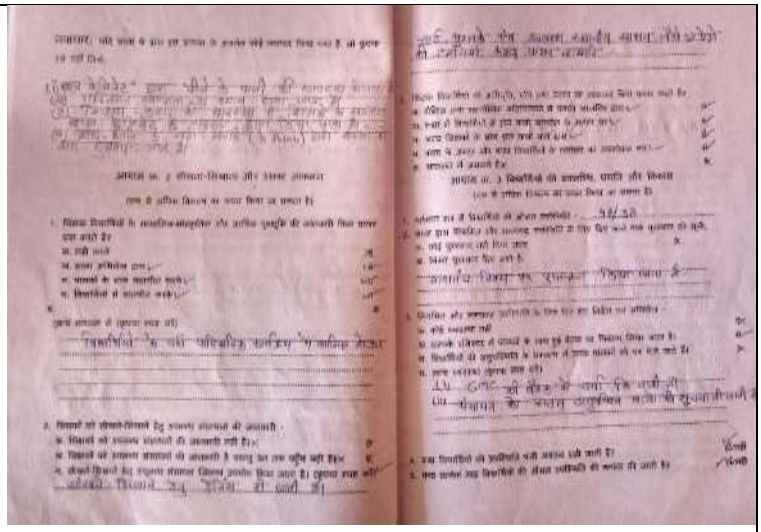

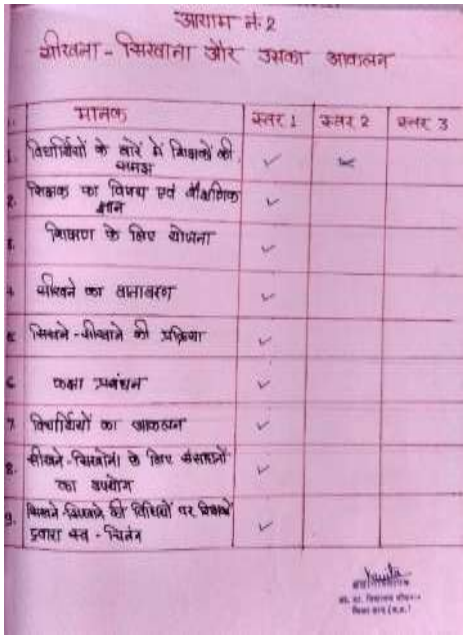

स्वआकलन प्रपत्रों का संधारण

स्वआकलन – आयाम 2

आयाम नं. 2
सीखना - सिखाना और उसका आकलन

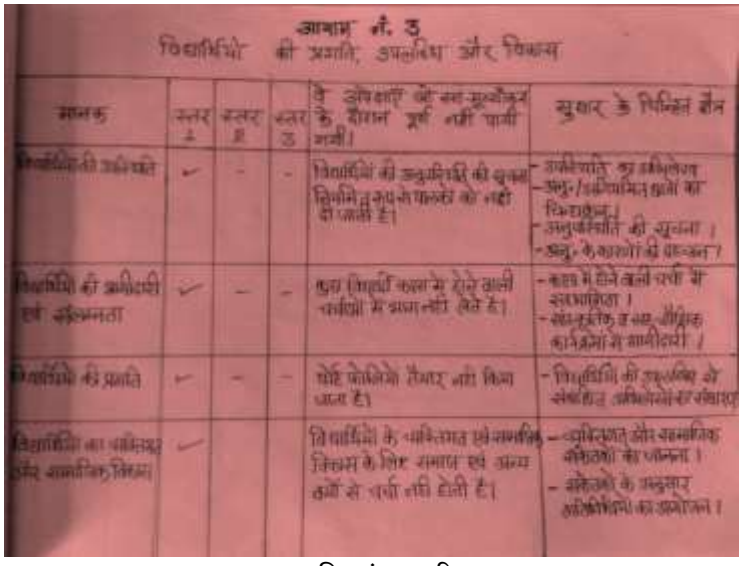

	मानक	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
1.	विद्यार्थियों के बारे में शिक्षकों की समझ	✓	✓	
2.	शिक्षक का विषय एवं शैक्षणिक ज्ञान	✓		
3.	शिक्षण के लिए योजना	✓		
4.	सीखने का वातावरण	✓		
5.	सिखाने - सीखाने की प्रक्रिया	✓		
6.	कक्षा प्रबंधन	✓		
7.	विद्यार्थियों का आकलन	✓		
8.	सीखने - सिखाने के लिए संसाधनों का उपयोग	✓		
9.	सिखाने - सीखाने की विधियों पर शिक्षकों द्वारा स्व - चिंतन	✓		

स्वआकलन जांच सूची आयाम 2

आयाम नं. 3
विद्यार्थियों की प्रगति, उपलब्धि और विकास

स्वआकलन की जांच सूची आयाम 3
नवीन प्रपत्र अनुसार

मेरी शाला का बाह्यमूल्यांकन –

प्रशिक्षण के दौरान बाह्यमूल्यांकन के संबंध में यह जानने को मिला था कि इस प्रक्रिया में शाला से बाहर के व्यक्तियों द्वारा शाला का आकलन किया जाएगा। यह आकलन किस प्रकार से होगा इस संबंध में हमें अधिक जानकारी नहीं थी।

हमारी शाला में बाह्यमूल्यांकन की सूचना बाह्यमूल्यांकनकर्ताओं द्वारा लगभग तीन दिन पहले शाला को दे दी गयी थी। शाला का बाह्य मूल्यांकन बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल एवं जनशिक्षक श्री जगदीश चौहान द्वारा दिनांक 03 अगस्त 2016 को बाह्यमूल्यांकन प्रपत्र के 9 टूल्स के माध्यम से किया गया। इस कार्य में बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल की भूमिका सार्थक रही।

बाह्यमूल्यांकन के दौरान जब हमारे द्वारा अधिकतर प्रश्नों के उत्तर हां में दिए जाने लगे तो बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल ने हमें इसके प्रभावों एवं दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से समझाया। इसका प्रभाव हमारी दैनिक कार्यशैली पर यह हुआ कि अब मैं और मेरी साथी पूरी तरह विश्वस्त होने पर ही किसी प्रश्न का उत्तर हां में देते हैं। साथ ही बाह्यमूल्यांकन के दौरान शाला और बाह्यमूल्यांकनकर्ता को प्रश्न और उनके उत्तरों से स्तर निर्धारण का पता नहीं चलता है, जिससे बाह्यमूल्यांकनकर्ता प्रक्रिया के दौरान किसी भी पक्ष के लिए सीधे-सीधे कोई राय नहीं बना पाते हैं। शाला या परिस्थितियों के प्रति उनके पूर्वाग्रह भी प्रभावी नहीं होते हैं। बाह्यमूल्यांकन की मदद से शाला द्वारा मानकों के उच्च स्तर निर्धारण की गलती को रोका जा सकता है। बाह्यमूल्यांकन से शाला को दूसरे नजरिए से देखने की सुविधा मिलती है यह बाह्यमूल्यांकन की महत्वपूर्ण पहलू है। बाह्यमूल्यांकन प्रक्रिया पर बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल के विचार निम्न हैं –

"प्राथमिक शाला बोधवाड़ा और मेरा विद्यालय एक ही परिसर में हैं। शाला के बाह्यआकलन के पूर्व कई बार इस शाला को देखा था, किंतु नजदीक से परखने का मौका बाह्यआकलन की प्रक्रिया के दौरान मिला। मैंने यह जाना कि बाह्यमूल्यांकन की प्रक्रिया स्वआकलन की प्रक्रिया से अलग है तथापि टूल में वर्णित प्रश्न सभी 7 आयामों को अपने में समेटे हुए है। बाह्यमूल्यांकन के द्वारा शाला की अधिक स्पष्ट स्थिति ज्ञात की जाती है तथा पूर्वाग्रही छवि हटकर से सटीक स्थिति को सभी हितधारकों के समक्ष लाने का कार्य किया जाता है।"

बाह्यमूल्यांकन टूलकिट -

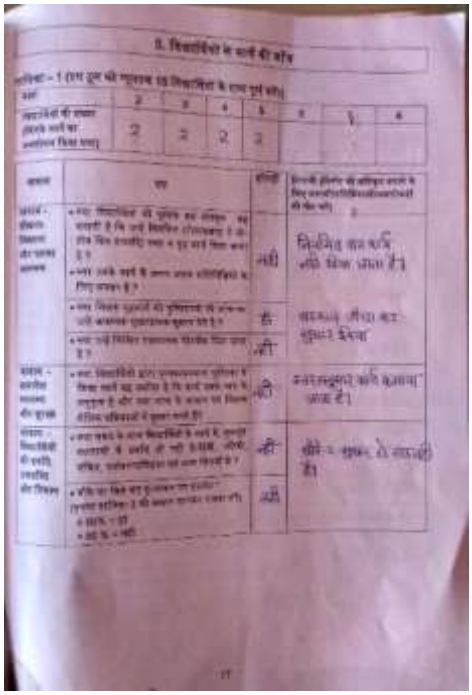	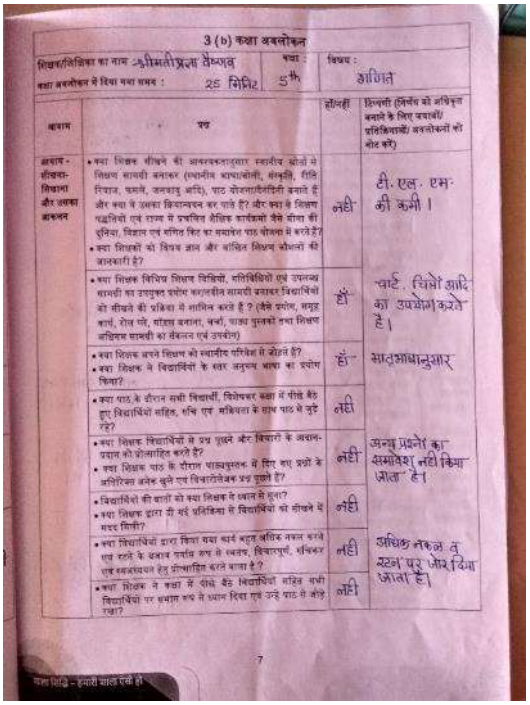
शाला के बाह्यमूल्यांकन का टूल – 5	शाला के बाह्यमूल्यांकन का टूल – 3

बाह्यमूल्यांकन प्रतिवेदन –

कार्यक्रम में राज्य स्तर से किए गए बदलाव एवं नवीन जांच सूची के कारण बाह्यमूल्यांकन का कंप्यूटर जनित प्रतिवेदन नवंबर माह में शाला को प्राप्त हुआ। हमें यह देखकर खुशी हुई कि मानकों के जो स्तर हमारे द्वारा स्वआकलन में निर्धारित किए गए थे वे ही स्तर बाह्यमूल्यांकन की प्रक्रिया से प्राप्त हुए। बाह्यमूल्यांकनकर्ता श्री मुकेश पटेल ने बाह्यमूल्यांकन प्रतिवेदन को शाला के साथ साझा करते हुए इसका कारण बताया कि बाह्यमूल्यांकन बगैर किसी पूर्वाग्रह के एवं पूरी प्रक्रिया का पालन करते हुए संपन्न कराया गया था इसलिए शाला द्वारा निर्धारित स्तर एवं बाह्यमूल्यांकन के स्तरों में अंतर नहीं आया।

शाला उन्नयन कार्ययोजना का निर्माण –

हमारी शाला द्वारा सितंबर 2016 से ही कार्ययोजना का निर्माण का कार्य, जिले से प्रदत्त फॉर्मेट पर, प्रारंभ कर दिया गया था। कार्ययोजना निर्माण के दौरान शाला द्वारा समय समय पर कई बदलाव किए गए। इनमें विभिन्न स्तरों से प्राप्त सुझावों को भी शामिल किया गया। कार्ययोजना निर्माण के दौरान बाह्यमूल्यांकनर्ता श्री मुकेश पटेल, आर्क से श्री देवेन्द्र शर्मा, डीआरजी-एसआरजी, राज्य स्तरीय टीम एवं सचिव स्कूल शिक्षा श्रीमति दीप्ति गौड़ मुकर्जी से सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शाला प्रतिवेदन, स्वयं की समझ, प्राप्त सुझाव, हमारी शाला ऐसी हो हेंडबुक के सहयोग से शाला उन्नयन कार्ययोजना का निर्माण किया। कार्यक्रम पर अपनी समझ एवं आर्क प्रतिनिधि के सुझावों के आधार पर शाला द्वारा कार्ययोजना में सम्मिलित कुछ क्षैत्रों / मानकों पर तुरंत कार्य प्रारंभ कर दिया गया था। आर्क प्रतिनिधि द्वारा शाला का ध्यान कुछ छूटे हुए क्षेत्रों पर भी दिलाया गया। इसमें आयाम 2 एवं 3 के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित थे। ये सभी कार्य अंतिम कार्ययोजना का हिस्सा बने।

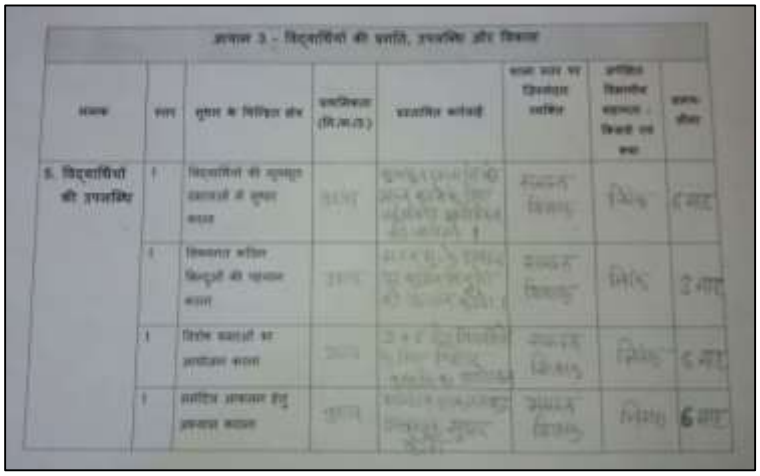

चिन्हित क्षैत्रों हेतु आवश्यक कार्यबिंदुओं का चयन शाला की वर्तमान स्थिति एवं क्षमताओं को देखकर किया गया। यह ध्यान रखा गया कि सभी आवश्यक क्षेत्रों एवं कार्यबिंदुओं का समायोजन अवश्य कर लिया जाए। शाला स्तर पर फरवरी के प्रथम सप्ताह में कार्ययोजना को अंतिम स्वरूप प्रदान किया गया और 10 एवं 11 फरवरी 2017 को डाईट धार ले जाकर, इसे पोर्टल पर अपलोड करवाया गया।

कार्ययोजना का क्रियान्वयन

कार्यक्रम पर मेरी समझ, बाहरी मार्गदर्शन तथा जनशिक्षाकेंद्र प्रभारी प्राचार्य महोदया के सहयोग से माह सितंबर-अक्टूबर 2016 से ही कुछ कार्यबिंदुओं पर कार्य आरंभ कर दिया गया था। जनवरी 2017 में कार्ययोजना को अंतिम स्वरूप में पहुंचाने के साथ ही साथ कार्ययोजना में शामिल अन्य कई क्षेत्रों पर भी शाला ने कार्य आरंभ कर दिया है।

शाला उन्नयन कार्ययोजना में शामिल क्षेत्रों में से सर्वप्रथम आयाम 2, 3, 6 पर कार्य आरंभ किया गया। जनशिक्षाकेंद्र प्रभारी प्राचार्य की सहायता से एवं शाला में उपलब्ध संसाधनों की सहायता से आयाम 1, 4 पर भी कार्य किया जा रहा है।

हमारी शाला द्वारा कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु आयामवार किए जा रहे प्रयास निम्नानुसार हैं –

क्रमांक	आयाम का नाम	मानक जिन पर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है	शाला द्वारा किए जा रहे प्रयास
1	**शाला में उपलब्ध संसाधन – उनकी उपलब्धता, पर्याप्तता और उपयोगिता**	• शाला परिसर • कक्षा और अन्य कक्ष • विद्युत और उपकरण	• शाला परिसर की रंगाई पुताई (पूर्ण) • कक्षा कक्षों को सुव्यवस्थित करना (पूर्ण) • शाला प्रधान हेतु कक्ष की व्यवस्था (पूर्ण)

क्रमांक	आयाम का नाम	मानक जिन पर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है	शाला द्वारा किए जा रहे प्रयास
		• पुस्तकालय • मध्याह्न भोजन, रसोई और बर्तन • पेयजल • हाथ धोने की सुविधाएँ	• विद्युत व्यवस्था (पूर्ण) • पुस्तकालय हेतु पुस्तकें प्राप्त करने के प्रयास (कार्य जारी) • मध्याह्न भोजन हेतु आवश्यक बर्तनों की व्यवस्था हेतु प्रयास (कार्य जारी) • पेयजल एवं हाथ धोने की व्यवस्था हेतु टंकी (पूर्ण)
2	**सीखनासिखाना और - उसका आकलन**	• विद्यार्थियों के बारे में शिक्षकों की समझ • शिक्षण के लिए योजना • कक्षा प्रबंधन • विद्यार्थियों का आकलन • सीखनेसिखाने की विधियों पर - चिंतन-शिक्षकों द्वारा स्व	• प्रत्येक विद्यार्थी हेतु नाम पट्टी (पूर्ण) • विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का ज्ञान (पूर्ण) • दैनिक आधार पर शिक्षक डायरी (पूर्ण) • कक्षा की बैठक व्यवस्था में परिवर्तन (पूर्ण) • विद्यार्थियों के आकलन हेतु विभिन्न टेस्ट से प्राप्त परिणामों का संकलन – *विद्यार्थीवार विश्लेषण* (संकलन पूर्ण एवं सुधार निरंतर जारी) • दैनिक आधार पर शाला एवं हाईस्कूल के स्टॉफ से चर्चा (निरंतर)
3	**विद्यार्थियों की प्रगति, उपलब्धि और विकास**	• विद्यार्थियों की उपस्थिति • विद्यार्थियों की भागीदारी एवं संलग्नता • विद्यार्थियों की प्रगति • विद्यार्थियों का व्यक्तिगत और सामाजिक विकास	• डी एवं ई ग्रेड के बच्चों की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु कक्षा में स्थान परिवर्तन (पूर्ण) • उपस्थिति भागीदारी एवं संलग्नता हेतु विभिन्न सह शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा उसमें विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करना • प्रत्येक विद्यार्थी को प्रोत्साहन स्वरूप पुरूस्कार वितरण (गणतंत्र दिवस पर सभी को पेन, पेंसिल, स्केल एवं पट्टी पहाडे का वितरण)
4	**शिक्षकों का कार्य-प्रदर्शन और उनका व्यावसायिक उन्नयन**	• शिक्षक उपस्थिति • पाठ्यक्रम की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षकों की तैयारी • शिक्षकों के कार्यप्रदर्शन की - मॉनिटरिंग	• शाला प्रमुख द्वारा स्टाफ को मार्गदर्शन एवं दैनिक आधार कार्य प्रदर्शन संबंधी चर्चा (निरंतर) • आवश्यकतानुसार जनशिक्षाकेंद्र प्रभारी से सहयोग (निरंतर)
5	**शाला नेतृत्व और शाला प्रबंधन**	• सीखनेसिखाने के लिए नेतृत्व-	• शाला प्रमुख के कक्ष में कक्षावार पाठ्यक्रम की प्रतिलिपि का प्रदर्शन (पूर्ण)

क्रमांक	आयाम का नाम	मानक जिन पर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है	शाला द्वारा किए जा रहे प्रयास
6	**समावेश, स्वास्थ्य और सुरक्षा**	• समावेश का वातावरण • शारीरिक सुरक्षा • भावनात्मक सुरक्षा • स्वास्थ्य और साफ़सफ़ाई-	• सक्रिय बाल केबिनेट (पूर्ण) • प्राथमिक उपचार हेतु व्यवस्थाएं (पूर्ण) • गणतंत्र दिवस पर विद्यार्थीयों को टूथ ब्रश का वितरण (पूर्ण) •
7	**समुदाय की सहभागिता**	• शाला प्रबंधन समिति का गठन और (एसएमसी) प्रबंधन	• शाला प्रबंधन समिति का गठन (पूर्ण)

उपलब्धियां

शाला में शाला उन्नयन कार्ययोजना का क्रियान्वयन जारी है। हम अपने प्रयासों से शाला में भयमुक्त वातावरण बनाने में सफल रहे हैं। वर्तमान में आनंददायी वातावरण के प्रयास जारी हैं साथ ही कक्षा कक्ष शिक्षण मे सुधार करते हुए बच्चों को मूलभूत दक्षताएं पाने में सहयोग करने के प्रयास भी जारी हैं। शाला अपने प्रयासों से कुछ क्षेत्रों में आवश्यक परिवर्तन लाने में सफल रही है। ये क्षेत्र निम्न हैं –

दृष्टिकोण परिवर्तन – शाला सिद्धि कार्यक्रम से जुडकर मेरे और मेरी शाला के स्टाफ की सोच में परिवर्तन आया है। अब हम प्रत्येक कार्य को उसी प्रकार व्यस्थित तरीके से करने का प्रयास करते हैं जैसे कि कार्यक्रम में आयाम और मानक गुथे हुए हैं। इस कार्यक्रम से हमें हमारे कार्य को करने के लिए एक संरचनात्मक दिशा मिली है।

आत्मविश्वास – जितनी मेहनत हमारी शाला ने इस कार्यक्रम को समझने में की है और जो प्रयास हम कर रहे हैं उसके तात्कालिक फलस्वरूप हमारे आत्मविश्वास में तो वृद्धि हुई ही है साथ ही साथ बच्चों के व्यवहार में भी परिवर्तन देखने को मिलने लगे हैं। उदा. स्वरूप, हमने डी और ई ग्रेड के बच्चों के बैठने के स्थान में जो परिवर्तन करवाया है उसकी वजह से उन बच्चों के प्रतिभागिता स्तर में वृद्धि हुई है।

बेहतर कार्ययोजना निर्माण – शाला की कार्ययोजना का अवलोकन विभिन्न स्तरों पर किया गया है जिससे शाला को कई स्तरों से फीडबैक प्राप्त करने तथा कार्ययोजना को और अधिक बेहतर बनाने के मौके मिले हैं।

विद्यार्थी आकलन चार्ट का निर्माण – शाला द्वारा कक्षा 1 से लेकर 5 तक के विद्यार्थियों हेतु आकलन चार्ट का निर्माण किया गया है तथा उसको निश्चित अंतराल पर अद्यतन किया जाता है।

कक्षावार पाठ्यक्रम - शाला प्रमुख के कक्ष में कक्षावार पाठ्यक्रम की प्रतिलिपि को चस्पा किया गया है, तथापि शाला का ध्यान विद्यार्थीवार आवश्यक आधारभूत कौशलों का विकास करने पर अधिक है।

विद्यार्थियों की संलग्नता एवं भागीदारी – विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गतिविधियों में संलग्न करने हेतु शाला विशेष प्रयास कर रही है। विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रोत्साहन स्वरूप पुरूस्कारों का वितरण इनमें प्रमुख हैं।

बाल केबिनेट – शाला में बाल केबिनेट को शाला सिद्धि के प्रशिक्षण उपरांत ही सक्रिय किए जाने के प्रयास प्रारंभ किए गए हैं।

शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा – शाला का स्टाफ विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि को जानता है तथा उसी के अनुसार कार्य करता है। शाला में प्राथमिक उपचार हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं की गयी हैं। यदि काई विद्यार्थी शाला समय में बीमार होता है तो स्टाफ विद्यार्थी की पारिवारिक स्थिति के अनुसार निर्णय लेता है। जिन बच्चों के माता पिता मजदूरी पर जाते हैं उन्हें शाला में ही रखकर आवश्यक उपचार करवाने का प्रयास भी किया जाता है।

भौतिक संसाधन – शाला परिसर की सफाई एवं रंगाई पुताई का कार्य पूर्ण हो गया है। शाला प्रमुख हेतु अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था भी कर ली गई है। शाला में पेयजल एवं हाथ धोने हेतु एक टेंक की व्यवस्था भी कर ली गई है। शाला में विद्यार्थियों द्वारा शाला उद्यान तैयार किया गया है।

चुनौतियाँ

शाला सिद्धि - हमारी शाला ऐसी हो कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान मेरे और मेरी शाला ने निम्नानुसार चुनौतियों का सामना किया -

शिक्षकों की संख्या – कार्यक्रम के क्रियान्वयन की दृष्टि से शाला में केवल 2 ही शिक्षिकाएं होना चुनौती रही। किसी एक शिक्षिका के व्यस्त होने से दूसरी शिक्षिका पर जिम्मेदारियां बढ जाती हैं।

कार्यक्रम पर समझ – कार्यक्रम पर स्वयं एवं साथी की समझ बनाना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था। प्रशिक्षण के दौरान बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि समझ बनाने में इतना अधिक समय और उर्जा लगेगी।

अन्य गतिविधियों/कार्यक्रमों के साथ समन्वय – शासन के विभिन्न स्तरों से कई अन्य कार्यक्रम एवं आयोजन भी होते हैं। उन सभी के साथ समन्वय स्थापित करते हुए शाला सिद्धि के लिए पूरे ध्यान से कार्य करना चुनौती है।

कार्यक्रम के दौरान परिवर्तन – प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के पश्चात किए गए परिवर्तन और जिले से प्रदाय निर्देशों के आधार पर पूर्व से जारी कार्यक्रम में साथ साथ बदलाव करते हुए कार्ययोजना निर्माण चुनौतीपूर्ण रहा।

आगामी लक्ष्य

शाला उन्नयन कार्ययोजना अनुसार शाला के समक्ष आयाम 2 एवं 3 इस समय उच्च प्राथमिता पर हैं, विभिन्न कारणों से बच्चों को पढाने के समय में जो कमी आई है उसे पूरा करना प्रथम लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त आगामी समय में शाला निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देगी -

- सीखने की प्रक्रिया एवं सीखने सिखाने के संसाधन का उपयोग
- विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में निरंतर सुधार
- समुदाय एवं शाला प्रबंधन समिति की सक्रियता
- शिक्षकों का व्यावसायिक उन्नयन
- आयाम 5 अंतर्गत नेतृत्व से संबंधित मानकों पर कार्य

जब बच्चे शिक्षक की न्यूनतम मदद से, स्वयं अपनी रूचि से कार्य करने लगें, इतना भरोसा बच्चों में जगाना हमारा अगला लक्ष्य है। शाला सिद्धि कार्यक्रम की भावना के अनुरूप शाला द्वारा भयमुक्त वातावरण का निर्माण कर दिया गया है। इस समय शाला आनंददायी वातावरण का निर्माण कर रही है। आगामी समय में बच्चों के स्तर अनुरूप आवश्यक कौशलों का विकास शाला का प्राथमिक लक्ष्य होगा।

"शाला सिद्धि, विद्यालय के शिक्षकों को अपनी क्षमता मापने का मौका देने वाला कार्यक्रम है।"

श्रीमति तिलोत्तमा शिंदे (प्राचार्या एवं जनशिक्षाकेंद्र प्रभारी)

"गुणवत्ता उन्नयन हेतु हम सभी हमेशा से प्रयास करते रहे हैं, शाला सिद्धि कार्यक्रम के माध्यम से मुझे और मेरी शाला को अपने प्रयासों हेतु एक सुनियोजित दिशा मिली है।"

श्रीमति कविता मित्तल (प्रधान पाठक)

"मुझे सीखने का अवसर मिला है। यह कार्यक्रम मेरे और शाला से संबंधित सभी आवश्यक पहलुओं को सूचीबद्ध कर सुनियोजित विकास का अवसर है।"

श्रीमति प्रज्ञा वैष्णव (सहायक अध्यापक)

"इस कार्यक्रम की सहायता से शाला की अधिक स्पष्ट स्थिति ज्ञात की जाती है तथा पूर्वाग्रही छवि हटकर से सटीक स्थिति को सभी हितधारकों के समक्ष लाने का कार्य किया जाता है।"

श्री मुकेश पटेल (बाह्य मूल्यांकनकर्ता)